

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान जोरहाट

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान एक राष्ट्रीय संस्थान है, जिसे वर्ष 1988 में जोरहाट, असम में स्थापित किया गया, जो भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद, की एक संघटक इकाई है। संस्थान का अधिदेश प्राकृतिक पुनर्जनन, झूम खेती का नियंत्रण, सामुदायिक वनों के प्रबंध पारि-पुनरुद्धार के लिए रोपण पद्धतियों और बांस तथा बेंत पर अनुसंधान पर जोर देने के साथ वन पारितंत्र का संरक्षण करना है।

वर्ष 2005–2006 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : खासीपाइन (पाइनस केसिया) का आनुवंशिक सुधार (आर एफ आर आई / टी आई / 08 / 2002–2005)

उपलब्धियां : मणिपुर और मेघालय राज्य में शिलांग वन प्रभाग में रीट ख्वान और मध्य वन प्रभाग, इम्फाल में खोंघाम्पेट में पाइनस केसिया के 5 हैक्टेयर और 10 हैक्टेयर बीज उत्पादन क्षेत्र (एस पी ए) स्थापित किए गए।

मेघालय की पूर्वी और पश्चिमी खासी पहाड़ियों में कुल 33 धन वृक्षों का चयन किया गया। मेघालय राज्य में नियंत्रण के साथ 16 सन्ततियों के साथ यादृच्छिकीकृत ब्लॉक अभिकल्प में 2 हैक्टेयर से अधिक क्षेत्र में उमियाम, बारापानी में पौध बीजोद्यान एवं सन्तति परीक्षण स्थापित किए गए।

पाइनस केसिया के लिए बीज परिपक्वता तालिका को पैरामीटर के रूप में परिपक्व शंकुओं के विशिष्ट घनत्व का उपयोग करके निर्धारित करते हैं। मेघालय के चीड़ वनों में कुछ धन वृक्षों में चार, पांच और यहां तक कि छः क्लस्टरों की प्राप्ति देखी गई। यह एक असाधारण लक्षण है और भावी सुधार कार्यक्रमों में उद्यानों में बीजों के उत्पादन के लिए इनका विदोहन किया जा सकता है।

मेघालय राज्य में खासी पहाड़ियों के चीड़ क्षेत्र में खासीपाइन (पाइनस केसिया) के अलावा लाल चीड़ की उपस्थिति का, लाल चीड़ और सफेद चीड़ (खासीपाइन) वृक्षों से एकत्रित काष्ठ, सूची और शंकुओं के नमूनों का विश्लेषण करके, निराकरण किया गया। यह उद्घाटित किया गया कि मेघालय में खासीपाइन क्षेत्र में लाल चीड़ नहीं है।

परियोजना 2 : बांस और बेंतों की वितरण गतिकी पर अध्ययन और इनका पर-स्थाने संरक्षण (आर एफ आर आई / ई ई / 03 / 2004–2007)

उपलब्धियां : भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों के बांसों के प्राप्तिस्थान मानचित्र और बांस की 4 किस्मों और 32 प्रजातियों के पर-स्थाने संरक्षण पूरा किया गया और आकारिकी के आधार पर कुछ बांस प्रजातियों की पहचान का काम प्रगति पर है।

परियोजना 3 : पूर्वोत्तर भारत के चयनित औषधीय पादपों के जननदृव्य संग्रहण, संरक्षण और बहुमात्र गुणन (आर एफ आर आई / ई ई / 05 / 2003–2006)

उपलब्धियां : वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, परिसर में 5 चयनित औषधीय पादप प्रजातियों (बाकोपा मोनीरी, एन्ड्रोग्रेफिस यूनिकुलाटा, प्लम्बेगो जीलेनिका, प्लम्बेगो इंडिका और एस्पेरेगस रेसीमोसा) का संग्रहण और पर-स्थाने संरक्षण किया गया। एन्ड्रोग्रेफिस पेनिकुलाटा, प्लम्बेगो जीलेनिका और प्लम्बेगो इंडिका के प्रवर्धन के लिए प्रोटोकॉल विकसित किया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 4 : असम के गिबॉन वन्यप्राणि अभ्यारण्य के डिप्टीरोकार्पस वन पर पारिस्थितिकीय अध्ययन (आर एफ आर आई / ई ई / 4 / 2003-2006)

उपलब्धियां : पोषणीयता के लिए उपयुक्त उपायों का सुझाव देने के दृष्टिकोण के साथ पारितंत्र की वर्तमान पारिस्थितिकीय स्तर को बताने के लिए गिबॉन वन्यप्राणि अभ्यारण्य में एक पारिस्थितिकीय अध्ययन किया गया।



प्राकृतिक वन स्थल



डिप्टीरोकार्पस रोपण स्थल

तीन विभिन्न स्थलों में वनस्पति की गणना ने क्रमशः रोपण, प्राकृतिक और विक्षुब्ध स्थलों में 298, 458 और 348 वृक्ष प्रति हेक्टेयर (>10 से.मी. वृक्षोच्चता व्यास) की उपस्थिति को दर्शाया। वृक्ष ऊँचाई स्तर विन्यास ने मान को दर्शाया जो इस तथ्य का सूचक है कि बड़े वृक्षों का पातन किया गया है।

पुनर्जनन स्तर का विचार करते हुए मीसुआ पौधे सबसे प्रधान थे इसके बाद वाटिका और डिप्टीरोकार्पस रीटूसस रहे। प्राकृतिक क्षेत्र में, मीसुआ, वाहिका और डिप्टीरोकार्पस रीटूसस के साथ इसी तरह का रुझान देखा गया। विक्षुब्ध स्थल में भी यह रुझान मीसुआ के साथ परिलक्षित था, इसके बाद वाटिका और डिप्टीरोकार्पस रीटूसस रहे। सभी तीन स्थलों में मीसुआ पौधों की प्रधानता ने दर्शाया कि गिबॉन वन्यप्राणि अभ्यारण्य विक्षुब्ध अवस्था में हैं क्योंकि छत्र का खुलना मीसुआ की स्थापना एवं वृद्धि के अनुकूल है, जो प्रकाशापेक्षी है।

परियोजना 5 : चयनित ऊर्जा रोपण प्रजाति की वृद्धि, जैवमात्रा और ऊर्जा उत्पादन क्षमता (आर एफ आर आई / एस सी / 07 / 2003-2006)

उपलब्धियां : की गई वृद्धि और जैवमात्रा ने मेलोटस एल्बस इसके बाद एन्थोसीफेलस चाइनेन्सिस, एलस्टोनिया स्कॉलेरिस और मीलिया एजैडेराक आदि में अधिकतम ऊँचाई वृद्धि देखी गई। गैर फलीदार में आर्टोकार्पस चपलासा में निम्नतम उत्तरोत्तर ऊँचाई वृद्धि देखी गयी। फली में, सेमेनीया सेमन और डैल्बर्जिया सिस्सू ने निम्नतम वृद्धि दर दर्शाई।

मैलोटस एल्बस में अधिकतम व्यास वृद्धि अभिलिखित की गई, इसके बाद एन्थोसीफेलस चाइनेन्सिस, एलस्टोनिया स्कॉलेरिस और मीलिया एजैडेराक रहे और डैल्बर्जिया सिस्सू और सेमेनीया सेमन में न्यूनतम कॉलर व्यास अभिलिखित किया गया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

आधारिय ऊँचाई पर व्यास एलस्टोनिया स्कॉलेरिस में उच्चतम अभिलिखित किया गया इसके बाद एन्थोसीफेलस चाइनेन्सिस और मैलोटस एल्बस में था। डैल्बर्जिया सिस्सू में न्यूनतम आधारिय व्यास अभिलिखित किया गया।

सेमेनीया सेमन, डैल्बर्जिया सिस्सू और आर्टोकार्पस चपलासा में न्यूनतम जैवमात्रा देखी गई। ऊर्जा मात्रा संघटनवारु निर्धारित की गई। एन्थोसीफेलस चाइनेन्सिस पत्ती ने उच्चतम ऊर्जा मात्रा अभिलिखित की इसके बाद मीलिया एजैडेराक और लेगरस्ट्रोमिया स्पीसिओसा में रही। फाइकस हिस्पिडा में निम्नतम पत्ती उस्मीय मान अभिलिखित किया गया। फलीदार प्रजातियों में, डैल्बर्जिया सिस्सू की शाखा में उच्चतम ऊर्जा मात्रा मापी गई और गैर फलियों में एन्थोसीफेलस चाइनेन्सिस में उच्चतम थी इसके बाद मीलिया एजैडेराक एवं एलस्टोनिया स्कॉलेरिस रहे।

परियोजना 6 : नागालैण्ड, भारत के दिमापुर और कोहिमा जिलों में जैवविविधता के सतत प्रबंध में अंगामी जनजाति की देशज जानकारी (आर एफ आर आई / इ पी / 03 / 2003-2006)

उपलब्धियां : नागालैण्ड के अंगामी लोग वन से आवश्यक संसाधनों यथा – ईंधन, भोजन, चारा, रंग, दवा आदि लाते हैं।

औषधीय पादपों की करीब 28 प्रजातियां, रंग उत्पादन करने वाली 14 प्रजातियां और जंगली खाद्य पादप की 20 प्रजातियां सूचित की गई हैं, जो ग्रामीण जनसाधारण के लिए आय एवं उत्तरजीविता के अच्छे स्रोत हैं। अंगामी द्वारा प्रयुक्त कुछ आशाजनक देशी औषधीय पादपों को, बहु जैविकीय प्रभावों जैसे – प्रदाहकरोधी, एलर्जीरोधी और कैंसररोधी गुणों के लिए सूचित किया गया है। फसलों की सुरक्षा, वनों के संरक्षण, जल संचयन प्रणाली, पीने के पानी के निस्पन्दन के लिए अंगामी देशी तकनीक को उपयोग करते हैं।



छनाई इकाई



धान के बंडल

परियोजना 7 : झूम खेती में परित्यक्त परती के सुधार पर N_2 निर्धारक पादपों का सहयोग (आर एफ आर आई / इ पी / 04 / 2003-2006)

उपलब्धियां : फली हरी खाद के उपयोग द्वारा मृदा के पोषक स्तर में महत्वपूर्ण सुधार हुआ। क्रोटेलेरिया पालिडा इसके बाद सेसबेनिया बाइस्पिनोसा को मिलाने के कारण मृदा के रासायनिक गुणों की वृद्धि अभिलिखित की गई। उर्वरता स्तर का पोषक जैव पदार्थ के आसान अपघटन के कारण हो सकता है, जो जैव रूप में वाउन्ड पोषक को अजैव रूप में बदलता है। सी. पलिडा प्रयुक्त भूखण्ड में चावल और मकई के उत्पादन में अधिकतम वृद्धि दर्ज की गई। चावल के मामले में, नियंत्रण की अपेक्षा उत्पादकता 36.2% बढ़ी। प्रयोग वर्ष के दौरान, सी. पलिडा प्रयुक्त भूखण्ड में कुल पोषक उदग्रहण मान अधिकतम पाया गया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 8 : असम के काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क में संरक्षक के लिए विभिन्न पारितंत्रों की जैविकीय विविधता का मूल्यांकन और विधियां स्थापित करना (आर एफ आर आई / ई पी / 06 / 2003-2006)

उपलब्धियां : काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क में वन समुदायों और घासभूमि उत्पादकता की मात्रात्मक संरचना, आबादी गतिकी का विश्लेषण किया। विभिन्न पारितंत्र में प्रजातियों की प्रधानता के आधार पर चार समुदायों की पहचान की गई।

घासभूमि गणना और जैवमात्रा अध्ययन ने लम्बे और अल्प घास समुदाय के भिन्न लक्षणों को दर्शाया। चार घासभूमि समुदायों की पहचान की गई।

एकत्रित आँकड़ों ने संकटस्थ प्रजाति, दुर्लभ आर्किडो की उपस्थिति उद्घाटित की और काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क, असम में बेंत प्रजाति भी सूचित की गई है।



लैंगस्ट्रोमिया- स्टीबलस समुदाय
रीपैरियन वन काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क

परियोजना 9 : वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, असम में परस्थाने संरक्षण के वानस्पतिक उद्यान/केन्द्रों में अवसंरचनात्मक सुविधाओं के सुधार के लिए वित्तीय सहायता (आर एफ आर आई / ई पी / 09 / 2003-2006)

उपलब्धियां : शेड एवं पॉली हाउस, आर्किडेरियम का निर्माण और सिंचाई सुविधाओं का विकास पूरा किया गया। पूर्वोत्तर क्षेत्र की दुर्लभ आर्किडों की 20 प्रजातियां एकत्र की। वानस्पतिक उद्यान की अन्य विकास कार्यकलाप प्रगति पर हैं।



कैलेन्थी मासुका का पुष्पण - वानस्पतिक उद्यान में एक स्थलीय आर्किड



वानस्पतिक उद्यान में आर्किडेरियम



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 10 : संयुक्त वन प्रबंध द्वारा सक्षम वन संसाधन प्रबंध के लिए गाँव स्तर समिति का क्षमता निर्माण (आर एफ आर आई/सी एफ ई/01/2002-2006)

उपलब्धियाँ : सहभागी एप्रोच द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का मूल्यांकन किया गया। सूक्ष्म योजना तैयार की गई। किसानों और विभिन्न उपभोक्ता समुदायों में जागरूकता सृजन और क्षमता निर्माण के लिए ग्रामीणों, किसानों, एस एच जी, गैर सरकारी संगठनों और सरकारी कार्मिकों को संस्थान स्तर पर और क्षेत्र स्तर पर विभिन्न प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया और गाँव स्तर पर उपयोगी प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया। उत्पादकता बढ़ाने के लिए विभिन्न कृषि और वानिकी समूहों को जैवउर्वरकों का उपयोग बताया गया। उपभोक्ता समूहों को श्रव्य दृश्य माध्यमों से विस्तार आधारित चलचित्र दिखाया गया। तकनीकी पुस्तक एवं पुस्तिकाओं का वितरण किया। देशी तकनीक और जानकारी को एकत्रित एवं प्रलेखित किया गया।



आवास में उपचारित बांस का उपयोग

परियोजना 11 : चयनित आर्द्र-उष्णकटिबंधीय सुरभित पादपों से सुगन्धित उत्पादों के उत्पादन एवं गुणवत्ता विशेषज्ञों पर अध्ययन (आर एफ आर आई/सी एफ ई/02/2002-2005)

उपलब्धियाँ : अनुकूलतम तेल उत्पादन के संदर्भ में पटचौली पत्तियों के सही फसल कटान समय का निर्धारण किया और अनुकूलतम तेल उत्पादन के संदर्भ में इन्द्रियग्राही विशेषकों का पता लगाया गया। पटचौली पत्तियों की सगंध तेल मात्रा पर विभिन्न विधियों में उपयुक्त शुष्कन विधियों का निर्धारण किया गया। खास परिष्करण के साथ विभिन्न आसवन विधियों का प्रयास किया और पटचौली पत्तियों से सगंध तेल के वर्धित उत्पादन के लिए प्रक्रियात्मक संशोधन किया गया।

पटचौली तेल के लिए थिन लेयर क्रोमेटोग्राफिक कैमिकल प्रोफाइलों को मानकीकृत किया गया। ग्रसित पत्तियों की तेल मात्रा में महत्वपूर्ण ह्रास अभिलिखित किया गया। इस प्रकार प्राप्त उत्पादों की लक्षणवर्णन के लिए आगे क्रोमेटोग्राफिक और स्पेक्ट्रल विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

परियोजना 12 : विभिन्न अन्तिम उपयोगों के लिए चयनित बांस प्रजातियों का जननदृव्य मूल्यांकन (आर एफ आर आई/एस एम/03/2001-2005)

उपलब्धियाँ : वर्षा वन अनुसंधान संस्थान पौधशाला में चार विभिन्न बांस प्रजातियों यथा - बम्बूसा न्यूटन्स, बम्बूसा बाल्कुआ, बम्बूसा टूल्डा और डेन्ड्रोकेलामस हैमिल्टोनी से संबंधित करीब 2067 शाखाओं की एक आधार आबादी उत्पादित की गई।

चार विभिन्न बांस प्रजातियों के कुल जीनप्ररूप/क्लोन ने त्रिपुरा के खासियामंगल की तुलना में नाहारोनी असम में सर्वोत्तम प्रदर्शन दर्शाया। ऊँचाई के संबंध में डी. हैमिल्टोनी के जीन प्ररूप/क्लोन संख्या S_4C_{10} में खासियामंगल, त्रिपुरा में सर्वोत्तम प्रदर्शन किया, इसके बाद बम्बूसा न्यूटन्स के S_3C_4 , बम्बूसा बाल्कुआ के S_3C_8 और बम्बूसा न्यूटन्स के S_3C_8 रहे। जहां तक कॉलर व्यास का संबंध है, डी. हैमिल्टोनी का सर्वोत्तम सन्तति/क्लोन S_4C_9 है इसके बाद बम्बूसा न्यूटन्स S_3C_3 के और S_3C_8 हैं। बम्बूसा न्यूटन्स S_3C_4 के



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

सन्तति/क्लों ने नाहारोनी, असम में ऊँचाई के संबंध में सर्वोत्तम प्रदर्शन दिखाया, इसके बाद बम्बूसा न्यूटन्स के S_3C_9 और बम्बूसा बाल्कुआ के S_2C_6 रहे। जहाँ तक कॉलर व्यास का संबंध है बम्बूसा बाल्कुआ का सर्वोत्तम सन्तति/क्लोन S_3C_{10} है इसके बाद बम्बूसा बाल्कुआ के S_2C_5 और S_2C_6 हैं।

वर्ष 2005-2006 के दौरान जारी परियोजनाएं

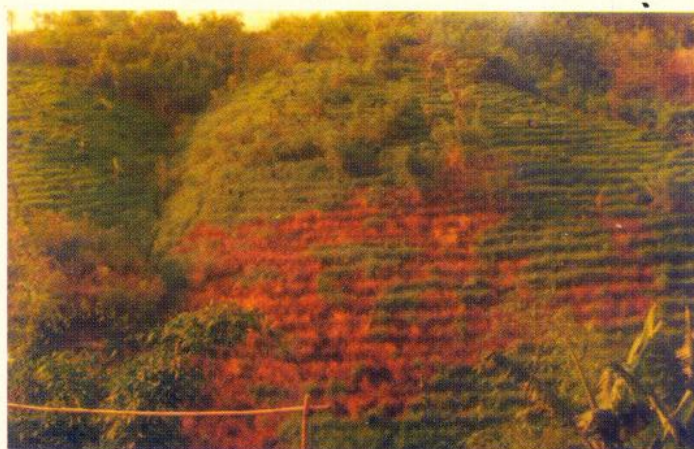
परियोजना 1 : केलोपीप्ला लीयाना लेंटर, मेलाइना आर्बोरिया (रॉक्सब.) का एक गंभीर नाशीजीव, के प्रबंध के लिए एक पारि-अनुकूल रणनीति का विकास (आर एफ आर आई / एफ ई / 11 / 2004-2007)

स्थिति : केलोपीप्ला लीयाना के विरुद्ध कीटरोगजनक कवक ब्यूवीरिया बेसियाना और मीटारहीजियम एनिसोप्लिया का रोगजनक मूल्यांकन किया गया। दोनों कवक सी. लीयाना की सभी अवस्थाओं के लिए रोगजनक पाए गए। इसके बाद विभिन्न अधःस्तरों का उपयोग करके कीटरोगजनक कवक बी. बेसियाना और एम. एनिसोप्लिया के बहुमात्र उत्पादन को मानकीकृत किया गया। मूगा रेशम कीट के साथ बी. बेसियाना और एम. एनिसोप्लिया के जैव सुरक्षा परीक्षण किए गए। दोनों कवक मूगा रेशम कीट के लिए हानिरहित पाए गए और सभी रेशम कीटों ने किसी भी विकृति एवं कुरचना के बिना प्यूपल अवस्था (कोकून) प्राप्त कर ली। बी. बेसियाना के बीजाणुओं को पृथक किया गया और इनकी स्व-जीवन सम्भावना की जांच के लिए विभिन्न शीशियों में 4 डी. से. पर रेफ्रिजरेटर में रखा गया, जो भण्डारण अवधि के करीब 8 माहों के लिए जीवनक्षम है।

परियोजना 2 : पूर्वोत्तर भारत में व्यवहार्य आर्थिक मॉडलों के विकास के लिए विभिन्न विद्यमान भूमि उपयोग प्रणालियों का मूल्यांकन (आर एफ आर आई / एस सी / 06 / 2003-2008)

स्थिति : सिलोनियानं, कार्बी एंगलांग असम, नागालैण्ड, और मेघालय में विभिन्न भूमि उपयोग प्रणाली के उत्पादकता आँकड़ा के सर्वेक्षण, चयन और संग्रहण पूरा किया गया। इस अवधि के दौरान मेघालय के विभिन्न भूमि उपयोग प्रणाली का सर्वेक्षण किया गया।

इस क्षेत्र में अनानास कोमोसस एवं जिंजिबर ऑक्सिनेली का लाभ लागत अनुपात एवं उत्पादकता झूम खेती की अपेक्षा उच्च है। इन शस्योत्पादन प्रणाली के मृदा पोषक स्तर ने दर्शाया कि फसल की उत्पादकता बढ़ाने में पी एच, आर्गेनिक कार्बन और नाइट्रोजन एक सक्रिय भूमिका अदा करते हैं।



अनानास कोमोसस का रोपण



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 3 : मेलाइना आर्बोरीया में विभिन्न लक्षणों के लिए विभिन्न क्लोनोनों एवं सन्ततियों का स्थायित्व परीक्षण (आर एफ आर आई / टी आई / 10 / 2003-2006)

स्थिति : पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न स्थानों में स्थापित सन्तति परीक्षणों का मूल्यांकन और मानीटरन का कार्य प्रगति पर है। लीलियामुरा (अगरतला) इम्फाल और नाहारोनी में स्थित सन्तति परीक्षण के तीन स्थलों से आँकड़े एकत्र किए। बीज भी एकत्र किए और अन्य परिषद् संस्थानों, जहां बहुस्थानिक परीक्षण प्रगति पर हैं, कि आवश्यकतानुसार वितरित किए।

परियोजना 4 : डिप्टीरोकार्पस रीटूसस का आनुवंशिक सुधार और क्लोनीय प्रवर्धन (आर एफ आर आई / टी आई / 11 / 2004-2007)

स्थिति : डिप्टीरोकार्पस रीटूसस के एक सक्षम क्लोनीय प्रवर्धन प्रोटोकॉल विकसित करने के लिए क्लोनीय प्रवर्धन परीक्षण प्रगति पर है। सन्तति परीक्षणों के मूल्यांकन के लिए विभिन्न वृद्धि संबंधित पैरामीटरों पर आँकड़े भी अभिलिखित किए और विभिन्न विशेषकों के लिए सभी सन्ततियों में महत्वपूर्ण विभिन्नता देखी गयी। ऊपरी असम तथा अरुणाचल प्रदेश से चयनित और 1999 में जोरहाट (असम) में उगाए गए धन वृक्षों से एकत्रित अर्ध-सहोदर बीजों से उगाई गई 18 सन्ततियों में से 11 में पुष्पण एवं फलन व्यवहार पर प्रेक्षण भी लिए गए।

परियोजना 5 : चेरापूंजी, मेघालय में अत्यधिक अपरदित स्थल का सुधार (आर एफ आर आई / एस एम / 4 / 2003-2006)

स्थिति : जुलाई माह में एलनस नीपेलेन्सिस और एक्सबकलेन्डिया पापुलेनिया के वृद्धि आँकड़े एकत्र किए और यह प्रेक्षित किया कि इस जलवायवीय क्षेत्र में ए. नीपेलेन्सिस का वृद्धि प्रदर्शन ई. पापुलेनिया की अपेक्षा बेहतर दिखाई पड़ा।

15 माह रोपण की अवधि के बाद एलनस नीपेलेन्सिस के लिए उत्तरजीविता प्रतिशत 92.19% था और एक्सबकलेन्डिया पापुलेनिया के लिए 83.69% था। क्रमशः एलनस नीपेलेन्सिस और एक्सबकलेन्डिया पापुलेनिया के लिए अधिकतम ऊँचाई वृद्धि 180 से.मी. और 60 से.मी. देखी गई।

नवम्बर माह में एलनस नीपेलेन्सिस और एक्सबकलेन्डिया पापुलेनिया के त्रैमासिक वृद्धि और उत्तरजीविता आँकड़े एकत्र किए। एलनस नीपेलेन्सिस के लिए उत्तरजीविता प्रतिशत 90.8% था और एक्सबकलेन्डिया पापुलेनिया की 75.18% थी।

परियोजना 6 : भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए पटचोली आधारित व्यवहार्य कृषिवानिकी मॉडलों का विकास (आर एफ आर आई / सी एफ ई / 04 / 2004-2006)

स्थिति : कृषिवानिकी पथ तैयार करने के लिए धूमिका कक्ष अवस्था के तहत रूट ट्रेनरों में कायिक गुणन द्वारा पटचोली पादप उगाए गए। सलबारी में किसानों के खेतों में अगार-पटचोली आधारित कृषिवानिकी ट्रेल, नूमालिगढ, भराली गांव और बोगोरी गांव में वीटल नट-पटचोली आधारित कृषिवानिकी ट्रेल और टीक टी इस्टेट, टीओक में बांस-पटचोली कृषिवानिकी ट्रेल तैयार किया गया। संबंधित किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध कराकर पटचोली प्रायोगिक परीक्षण भूखण्ड प्रबंधित किया। विभिन्न फसल पैरामीटरों पर आँकड़ों के संग्रहण के लिए फार्म परीक्षण स्थलों का दौरा किया गया।



सुपारी के साथ पटचोली



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

वर्ष 2005-2006 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1 : पूर्वोत्तर में बांस के गुणवत्ता रोपण स्टॉक के उत्पादन के लिए पौधशाला पद्धतियों का विकास (आर एफ आर आई / एस एम / 06 / 2005-2006)

स्थिति : बांस के जननदृव्य बैंक से 2 साल के डेन्ड्रोकैलामस हैमिल्टोनी बांस नालों को एकत्र किया। दो गाँठदार कलमें तैयार और उपचारित करके प्रवर्धन तकनीक को मानकीकृत करने के लिए क्यारियों में रोपित किया। आँकड़े अभिलिखित किए जा रहे हैं।

उन दो गाँठदार कलम से प्रशाखाओं को पृथक किया जा रहा है और अलग-अलग पात्र मीडिया में रोपित किया जा रहा है।

प्रयोग करने के लिए विभिन्न पात्र मीडिया तैयार किए गए।



नाल कलमें

परियोजना 2 : डिप्टीरोकार्पस रीटूसस के बीज नाशिकीटों का जैव पारिस्थितिकीय अध्ययन (आर एफ आर आई / एफ ई / 12 / 2005-2008)

स्थिति : वन भूमि से एकत्रित एलिसडोडीस क्रैसस (कोलीओप्टीरा) एक घुन और डायोरीक्टरिया एबिकूटीला और इनारमोनिया पल्विरुला (लीपिडोप्टीरा) शलभों को डिप्टीरोकार्पस रीटूसस के बीजों को ग्रसित करते हुए पाया गया। 8 से 10 प्रतिशत गिरे परिपक्व बीज इन कीटों से ग्रसित पाए गए। वन भूमि पर गिरने से पहले नायलॉन जालियों का उपयोग करके एकत्रित परिपक्व बीजों में कीट उत्पीड़न केवल 12-14% था।

परियोजना 3 : असम और मिजोरम में कार्बन पृथक्करण के संदर्भ में बांस प्रजातियों की सक्षम भूमिका (आर एफ आर आई / ई ई / 07 / 2005-2008)

स्थिति : असम और मिजोरम के क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया और बांस के जैवमात्रा आकलन के लिए स्थलों का चयन किया गया। जोरहाट, असम में चयनित स्थलों से एक साल, दो साल और तीन साल के तीन आयु समूहों के बम्बूसा टूल्डा की ताजा जैवमात्रा आकलित की गई। ओवन शुष्क भार भी लिया गया। आगे अध्ययन प्रगति पर है।

परियोजना 4 : असम में जैवनिम्नीकरण के प्रति बांसों के प्राकृतिक प्रतिरोध पर तुलनात्मक अध्ययन (आर एफ आर आई / एफ पी / 8 / 2005-2008)

स्थिति : दफनभूमि परीक्षण के लिए दस बांस प्रजातियों, जैसा नीचे सूचीबद्ध है, का चयन किया गया जिसमें से सात प्रजातियों (मद 1-7) को वर्षा व.अ.सं. की बांसतालिका और स्थानीय बाजार से स्थानीय रूप से एकत्र किया गया। एक नयी प्रजाति बेम्बूसा बेम्बोस भी एकत्र किया और इसे जैवनिम्नीकरण के प्रति बांस के प्राकृतिक प्रतिरोध पर तुलनात्मक परीक्षण में शामिल किया गया।

जोरहाट में एक प्रायोगिक स्थल में बांस नमूने स्थापित किए गए और बर्निहाट में दूसरे प्रायोगिक स्थल के लिए नमूने पूरे किए गए।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 5 : वन संवर्धनिक पद्धतियों द्वारा विक्रेय नाल की उत्पादकता बढ़ाने के लिए बम्बूसा न्यूटन्स का प्रबंध (आर एफ आर आई / टी आई / 13 / 2005-2008)

स्थिति : दक्षिणपेट सतरा में यादृच्छिकीकृत ब्लॉक अभिकल्प में 4x4 मी अन्तराल में 36 ब्लॉकों में 0.5184 हैक्टेयर क्षेत्रफल में वर्ष 2002-2003 में बम्बूसा न्यूटन्स का रोपण लगाया गया। साहित्य का सर्वेक्षण किया और एकत्र किया। प्रारम्भिक प्रेक्षणों का अभिलेखन और क्षेत्र कार्य प्रगति पर है।

परियोजना 6 : गिबबॉन वन्यप्राणि अभ्यारण्य असम में जैवविविधता के संरक्षण के लिए वनस्पति की संरचनात्मक संरचना पर अध्ययन (आर एफ आर आई / एस सी / 08 / 2005-2008)

स्थिति : स्थल, भूभाग, भौतिक लक्षण और वनस्पति संयोजन से संबंधित सर्वेक्षण के लिए अध्ययन स्थलों का सर्वेक्षण किया गया। पादपी संघटक के तहत, पुष्पण पादपों, क्षेत्र के विशेष प्रजातियों के स्थान, पहचान एवं सूचीकरण पर अनुसंधान शुरु किया, जो हूलॉक गिबबॉन के प्राकृतिक आवास के सूचक हैं और हूलॉक गिबबॉन की जीवन शैली के लिए अपरिहार्य है। इस प्रकार की प्रजाति के ऋतुजैविकी व्यवहार का भी प्रेक्षण किया। हूलॉक गिबबॉन के स्वभाव और आवास के संदर्भ में पारिस्थितिकीय अध्ययन, जैसे-वनस्पति की संरचनात्मक संरचना, समुदाय अध्ययन, वनस्पति किस्म आदि, करने के लिए उपयुक्त स्थान का चयन किया गया।

परियोजना 7 : आर्बूस्कूलर माइकोराइजल कवक की विविधता और गतिकी तथा असम के कुछ औषधीय एवं सुरभित पादपों के जैवमात्रा उत्पादन पर इनका प्रभाव (आर एफ आर आई / एफ पी / 10 / 2005-2008)

स्थिति : असम के पांच जिलों यथा - जोरहाट, गोलाघाट, सोनितपुर, छत्तरी लखीमपुर और धीमाजी से 94 देशज औषधीय एवं सुरभित पादपों का सर्वेक्षण और मृदा तथा मूल परिवेषी जड़ नमूनों का संग्रहण पूरा किया गया। 52 देशज औषधीय एवं सुरभित पादप शेड हाउस में संरक्षित किए गए हैं। एकत्रित जड़ और मृदा का विश्लेषण प्रगति पर है। एकत्रित विभिन्न पादपों के जड़ नमूनों ने माइकोराइजल संक्रमण को अलग-अलग मात्रा दिखाई। मूल परिवेषी के साथ सम्बद्ध आर्बूस्कूलर माइकोराइजल बीजाणुओं की संख्या भी अलग-अलग प्रजातियों में अलग-अलग थी।



झेकीना



नीफाफू



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

वर्ष 2005-2006 के दौरान जारी परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : मेलाइना आर्बोरीया पर केलोपीप्ला लीयाना के प्रबंध के लिए कीटरोगजनक कवक का संवर्धन : एक पारिअनुकूल एप्रोच (आर एफ आर आई / ई पी / 10 / 2005-2006)

स्थिति : विभिन्न कीट समूहों के मृत एवं रोगग्रस्त लार्वा और वयस्कों से कीटरोगजनक कवक यथा - ब्यूवीरिया बेसियाना, मीटारहीजियम एनिसोप्लिया, एस्परजिलस प्रजाति और फ्यूजेरियम प्रजातियां पृथक की गईं। केलोपीप्ला लीयाना की लार्वल और वयस्क दोनों अवस्थाओं के विरुद्ध सभी कवक प्रभावी थे।

परियोजना 2 : ब्रह्मपुत्र नदी में माजूली द्वीप की उत्पादक भूमि और आशाजनक वनस्पति का संरक्षण (आर एफ आर आई / ई पी / 05 / 2003-2006)

स्थिति : विभिन्न उपभोक्ता समूहों का चयन करके प्राकृतिक संसाधनों का मूल्यांकन किया गया। औषधीय एवं अन्य पादप संसाधनों के बारे में स्थानीय निवासियों के देशी ज्ञान को एकत्र करके प्रलेखित किया। आर्थिक उत्थान एवं जैवविविधता संरक्षण के लिए कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पादपों के सही सफल कटान एवं भण्डारण पद्धतियों पर ग्रामीणों, किसानों, एस एच जी के लिए अनेकों प्रशिक्षण आयोजित किए। हरी खाद द्वारा मृदा उर्वरता वृद्धि भी सूचित की गई। ग्रामीणों, किसानों, एस एच जी के लिए बांस परिरक्षण एवं कृषिवानिकी से संबंधित प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया। खेत के पुश्तों में मोरिंगा, एरीका नट के साथ मोरिंगा, सिस्सू-धान जैसे कृषिवानिकी मॉडल स्थापित किए गए। उच्च उत्पादन के लिए जलाक्रान्त क्षेत्र में ट्रापा खेती और धान के लिए जल के प्रबंध का प्रदर्शन किया गया। खेत में



मृदा उर्वरता सुधार के लिए सेसबेनिया सेसबन (रेशा और ईंधन प्रजाति) का रोपण

बालू जमाव को नियंत्रित करने के लिए तूनी नदी के किनारे माइपोमीया कोर्नीया बांसों और केला की रक्षापट्टी की स्थापना की गई। मृदा उर्वरता में सुधार और रेशा तथा ईंधन के लिए शुष्क तने के उपयोग के हेतु सेसबेनिया सेसबन की खेती प्रगति पर है।

परियोजना 3 : बांस आधारित कायिक बांध द्वारा माजूली में मृदा एव नदी तट भूक्षरण का नियंत्रण (आर एफ आर आई / ई पी / 07 / 2004-2007)

स्थिति : सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन शुरू किया गया। सूक्ष्म योजना तैयार की गई। पौधों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए परियोजना स्थल के आसपास के क्षेत्रों में 12 समूहों में किसान पौधशालाओं की स्थापना की गई। समय-समय पर तकनीकी मार्गदर्शन दिया। इसी तरह कम्पोस्ट की आवश्यकता को पूरा करने के लिए खाद इकाइयों की स्थापना की गई। उपचारित बांस की आवश्यकता को पूरा करने के लिए परियोजना स्थल के पास पोटिया गांव में एक बांस उपचार इकाई की स्थापना की गई। बांध के लिए पदार्थों की खरीद की गई। रोपण क्षेत्र में तार बाड़ लगाने का कार्य प्रगति पर है। सभी चार विभिन्न क्षेत्रों में रोपण कार्य प्रगति पर है। स्थानीय निवासियों को सशक्त बनाने के लिए स्थल पर प्रशिक्षक कार्यक्रम आयोजित किए गए।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006



उपचारित बांस के साथ स्थल की तारबाड़

परियोजना 4 : पूर्वोत्तर भारत में चयनित बांस प्रजातियों के सूक्ष्म/वृहद् प्रवर्धित रोपण स्टॉक का मान्यकरण, परीक्षण एवं स्थानिक परीक्षण (आर एफ आर आई/ई पी/08/2005-2008)

स्थिति : नोडल अधिकारियों और सहायक एजेन्सियों के साथ सहानुबंध स्थापित किए गए। वांछित टी सी रोपण स्टॉक की आपूर्ति से संबंधित मामला एन एम बी ए और ग्रोमोर बायोटेक लि. के साथ उठाया गया। एच पी सी में टी सी रोपण स्टॉक के कठोरीकरण स्तर का समय-समय पर मानीटरन किया गया। विभिन्न क्षेत्र कार्यान्वयन एजेन्सियों के लिए धन अवमुक्त किया। प्रदर्शन रोपणों के लिए एच पी सी एल से मिजोरम एवं नागालैण्ड के नोडल अधिकारियों हेतु बम्बूसा बाल्कुआ के रोपण स्टॉकों की आपूर्ति को तेज कराया। सभी 8 क्षेत्र कार्यान्वयन एजेन्सियों द्वारा स्थानिक परीक्षण के लिए चयनित 20 हैक्टेयर क्षेत्र में से, दोनों राज्यों में प्रत्येक में 7-7 हैक्टेयर क्षेत्र में मिजोरम व नागालैण्ड में बम्बूसा बाल्कुआ के प्रदर्शन रोपण लगाए गए।

सारांश : परियोजनाओं की संख्या

राज्य का नाम	2005-2006 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2005-2006 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2005-2006 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
प्लान परियोजना	12	06	07
बाह्य परियोजनाएं	—	04	—
कुल	12	10	07

सहानुबंध और सहयोग

वानिकी और वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत पूर्वोत्तर राज्यों के राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालय, अन्य शोध संगठनों, जी.बी. पंत, एन एम बी ए, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, एन इ सी और गैर सरकारी संगठनों के साथ सहानुबंध एवं सहयोग स्थापित किया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परामर्श

1. वर्तमान में वर्षा वन अनुसंधान संस्थान असम के कामरूप जिला मिजोरस की मारा स्वायत्त जिला परिषद्, मणिपुर का टीनोपाल जिला और नागालैण्ड का मोकाकचुंग, कोहिमा और फीक जिलों में वनीकरण और वृक्षारोपण कार्यकलापों के मूल्यांकन पर परामर्श दे रहा है।
2. वर्षा वन अनुसंधान संस्थान सिक्किम सहित सभी पूर्वोत्तर राज्यों में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के अन्तर्गत उगाए गए रोपणों के मानीटरन एवं मूल्यांकन पर परामर्श दे रहा है।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / संगोष्ठी / सेमिनार / प्रदर्शनियां

आयोजित

1. वर्षा वन अनुसंधान संस्थान में 06 सितम्बर 2005 को "संरक्षण एवं रोपण कार्यकलापों के लिए बांस जननदृव्य बैंक एवं गुणन रणनीतियों का विकास" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें पूर्वी असम क्षेत्र के वन अधिकारियों ने भाग लिया।
2. टी आई एफ ए सी - डी एस टी प्रायोजित परियोजना के तहत सोखोरामुख गांव, माजूली (असम) में 6 जनवरी 2006 को 'ईंधनकाष्ठ एवं चारा प्रजाति का रोपण और बहुमात्र गुणन" पर प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ।
3. टी आई एफ ए सी-डी एस टी प्रायोजित परियोजना के तहत निमोनीचूमोइमारी गांव, माजूली (असम) में 23 फरवरी 2006 को "बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में बांस के लिए चयन एवं रोपण पद्धतियां" पर प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ।
4. भा.वा.अ.शि.प. परियोजना के तहत पोटिया गांव, माजूली (असम) में 27 फरवरी 2006 को "रोजगार और आय सृजन के लिए स्थानिक जैवसंसाधनों का दोहन" पर प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ।
5. राज्य वन सेवा महाविद्यालय, बर्निहाट (असम) और असम फॉरेस्ट गार्ड स्कूल, माकूम (असम) के प्रशिक्षणार्थियों को 10 दिसम्बर 2005 को "बांस प्रजातियों के प्रवर्धन एवं गुणन तथा पौधशाला प्रबंध पर प्रशिक्षण प्रदान किया।
6. वर्षा वन अनुसंधान संस्थान में 8 और 9 नवम्बर 2005 को "उन्नत पौधशाला प्रौद्योगिकी" पर दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें राज्य वन विभाग, मणिपुर के वन अधिकारियों ने भाग लिया।
7. वर्षा वन अनुसंधान संस्थान के परिसर में 26 अक्टूबर 2005 को सातवीं अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक सम्पन्न हुई।
8. जी बी पी आई एच ई डी प्रायोजित परियोजना के तहत पोटिया गांव, माजूली (असम) में 3 और 4 मई 2005 तक "आर्थिक उत्थान एवं जैवविविधता संरक्षण के लिए कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पादप के सही फसल कटान एवं भण्डारण पद्धतियों" पर प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ।
9. जी बी पी आई एच ई डी प्रायोजित परियोजना के तहत पोटिया गांव, माजूली (असम) में 10 मई 2005 को "बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में वनीकरण के लिए उपयुक्त पादप प्रजाति का चयन" पर प्रशिक्षण।
10. भा.वा.अ.शि.प. प्लान परियोजना के तहत चूमोइमारी गांव, माजूली (असम) में 14 मई 2005 को "उत्पादकता वृद्धि के लिए खाद एवं इसके उपयोग" पर प्रशिक्षण।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

11. वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में 8 और 9 नवम्बर, 2005 तक (राज्य वन विभाग, मणिपुर के वन अधिकारियों के लिए) "उन्नत पौधशाला प्रौद्योगिकी" पर प्रशिक्षण।
12. भा.वा.अ.शि.प. प्लान परियोजना के तहत कानियाजान गांव, माजूली (असम) में 17 नवम्बर 2005 को "तटीय बालू टिब्बों (चार एरिया) के लिए कृषिवानिकी मॉडल" पर प्रशिक्षण।
13. जी बी पी आई एच ई डी प्रायोजित परियोजना के तहत सोखोनामुख गांव, माजूली (असम) में 19 नवम्बर 2005 को "हरी खाद द्वारा मृदा उर्वरता वृद्धि" पर प्रशिक्षण।

सहभागिता

1. डॉ. ओमबीर सिंह, वैज्ञानिक सी ने भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय, देहरादून में 15 से 17 जून, 2005 तक सम्पन्न "भारत में वानिकी उपशमन परियोजनाओं को सुसाध्य बनाना : पणधारी संवाद एवं क्षमता-निर्माण को प्रोत्साहित करना" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
2. श्री एस.एस. जैन, वैज्ञानिक सी ने केरल वन अनुसंधान संस्थान, पीची, केरल, भारत में 21 से 24 फरवरी 2006 तक "वन आक्रमक प्रजातियों के लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली" पर कार्यशाला में भाग लिया।
3. जे.बी. कॉलेज, जोरहाट (असम) के 5 से 7 फरवरी 2006 तक प्लैटिनम जुबली समारोह के दौरान वैज्ञानिक प्रदर्शनी एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शन।
4. श्री पवन के. कौशिक, वैज्ञानिक बी, सामुदायिक वानिकी एवं विस्तार प्रभाग में राज्य व.अ.सं. जबलपुर में 6 से 8 फरवरी 2006 तक सम्पन्न "औषधीय एवं सुरभित पादपों को उगाना, प्रक्रमण, उपयोगिता परिवर्धन एवं विपणन" पर राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया।
5. डॉ. व्हाई.सी. त्रिपाठी, वैज्ञानिक ई एवं प्रमुख सामुदायिक वानिकी एवं विस्तार प्रभाग ने हिन्दुस्तान पेपर कार्पोरेशन लिमिटेड, जागी रोड, असम में 21 मई 2005 को "बांस के गुणवत्ता टी सी रोपण स्टॉक के उत्पादन एवं आपूर्ति पर बैठक में भाग लिया।
6. डॉ. व्हाई. सी. त्रिपाठी, वैज्ञानिक ई व प्रमुख, सामुदायिक वानिकी एवं विस्तार प्रभाग ने ग्रोमोर बायोटेक लि., होसूर (कर्नाटक) में 18 से 22 जुलाई 2005 तक बांस ऊतक संवर्धन पर प्रशिक्षण में भाग लिया।
7. डॉ. व्हाई. सी. त्रिपाठी, वैज्ञानिक ई व प्रमुख, सामुदायिक वानिकी एवं विस्तार प्रभाग ने डी बी टी, नई दिल्ली में 9 सितम्बर 2005 को "बांस के गुणवत्ता रोपण पदार्थ के बड़े पैमाने पर उत्पादन और प्रदर्शन के लिए परिचालन मार्गदर्शन" पर बैठक में भाग लिया।

अवार्ड

डॉ. जे.सिंह, वैज्ञानिक ई/प्रमुख, झूम खेती प्रभाग और उनकी टीम (डॉ. आई.पी.बोरा, अनु. अधिकारी, डॉ. ए. बरुआ, अनु. सहा. I और श्री एम. हुसैन, अनु.सहा-II) को वन संवर्धन के अलावा वानिकी के क्षेत्र में 26 मई 2005 को सर्वोत्तम शोधपत्र शीर्षक "इफैक्ट ऑफ शिप्टिंग कल्टिवेशन ऑन न्यूट्रिएन्ट स्टेटस ऑफ स्वॉयल इन सिलोनीजान (कार्बी-एंगलांग) असम" (इंडियन फॉरेस्टर नवम्बर 2003) के लिए वर्ष 2003 का प्रतिष्ठित स्लिच प्राइज प्रदान किया गया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

प्रतिष्ठित आगन्तुक

1. श्री डी.एस. तोमर, भा.व.से, प्रबंध निदेशक, उत्तरांचल वन विकास निगम ने 04 मई 2005 को वर्षा वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया।
2. श्री प्रद्युत बोर्दोलोई, माननीय वन मंत्री, असम ने 13 जुलाई 2005 को वर्षा वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया।
3. श्री पी.पी. श्रीवास्तव, पूर्वोत्तर परिषद, शिलांग के माननीय सदस्य ने 21 नवम्बर 2005 को वर्षा वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया और बांस एवं बैत अनुसंधान के संबंध में निदेशक और वैज्ञानिकों के साथ विचार-विमर्श किया।
4. डॉ. तपन दत्ता, असम के मुख्यमंत्री के सलाहकार, श्री एस. राव उपायुक्त, जोरहाट; डॉ. पी. गोगोई, प्रमुख, वनस्पति विभाग, डी.आर कॉलेज, गोलाघाट ने 12 जनवरी 2006 को वर्षा वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया और जोरहाट जिलों में बांसों की व्यापारिक खेती पर एक बैठक की।

विविध

1. इस संस्थान के श्री मृदुल सैकिया, खलासी, मोटर मैकेनिक्स, जिन्होंने 4 से 8 जनवरी 2006 तक जमशेदपुर, झारखंड में सम्पन्न चौदहवें अखिल भारतीय वन खेलकूद में परिषद् का प्रतिनिधित्व किया, ने पावर लिफ्टिंग में रजत पदक और वेट लिफ्टिंग में कांस्य पदक प्राप्त किया।
2. इस संस्थान के निदेशक, डॉ. एम. जार्ज, जिन्होंने 4 से 8 जनवरी 2006 तक जमशेदपुर, झारखंड में सम्पन्न चौदहवें अखिल भारतीय वन खेलकूद में परिषद् का प्रतिनिधित्व किया, ने टेनिस (सिनियर वेटरन डबल्स) में कांस्य पदक प्राप्त किया।